12725
1218

Test - 2308

मूल्यांकित उत्तरपुस्तिका a

Vikas Kumar Meena

2

16 AUG 2023

148½

दृष्टि The Vision

Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

उत्तर अच्छे हैं।
लेखन-शैली अच्छी है।
भूमिका-निष्कर्ष अच्छे हैं।
भाषा प्रवाहपूर्ण है।
उत्तरों का प्रस्तुतीकरण अच्छा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

E-51 मि

F-11

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - क

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

1. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) दुनिया में यह सब तो चलता ही रहता है, तुम अकेली कहाँ तक लड़ोगी?..... किसी चीज से अगर सचमुच प्यार हो या वह कीमती हो तो टूट-फूट जाने पर भी उसका मोह नहीं जाता।

संदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश नयी कहानी आंदोलन के रचनाकार शानी की रचना एक नाव के यात्री (एक दुनिया समानांतर) से लिया गया है।

उपर्युक्त गद्यांश में कीर्ति की माँ मिस मिलल से कह रही है।

व्याख्या: कीर्ति की माँ मिस मिलल को अपने पति से अलग रहने पर समझाते हुए कहती है कि कोई वस्तु या प्राणी अगर हमें प्रिय हो और वह हमारे लिए महत्व रखता हो, तो उसके बिछड़ने या दूर होने मात्र से उसके प्रति उत्पन्न होने वाला प्रेम समाप्त नहीं हो जाता। अतः तुम्हें अपने पति से बात करनी चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष:

(i) प्रस्तुत गद्यांश में प्रतीकात्मक भाषा का समावेश प्रतीत हो रहा है।

(ii) नयी कहानी की मूल समस्या इस गद्यांश में व्यक्त हुई है, जो संबंधों की टूटन को दर्शाती है।
कुछ अन्य कहानियाँ जैसे: टूटना, एक और जिंदगी भी संबंधों की टूटन को दर्शाती है।

(iii) समाज की रूढ़ीवादी सोच भी इस गद्यांश में व्यक्त हुई है, जहाँ अकेली स्त्री को प्रत्येक व्यक्ति हेय दृष्टि से देखता है। अतः नारी से समझौता करने को कहा जा रहा है।

(iv) संवादात्मक शैली का प्रयोग

(v) वर्तमान समाज में भी नारी के वस्तुकरण की यह प्रवृत्ति स्पष्टतः झलकती है, जहाँ बिना पुरुष के सानिध्य के नारी को त्याज्य माना जाता है।

Good 6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

(ख) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्त्तक होते ही जाते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश ललित निबंधकार 'बालकृष्ण भट्ट' के निबंध 'साहित्य जनसमूह के हृदय का विकास है' से उद्धृत है। जिसमें हिंदू जाति के खण्ड की समस्या को बताया गया है।

व्याख्या: हिंदू धर्म में कालांतर में खंडन होने के कारण अब समय-समय पर इससे नए धर्म और नए मतों का उदय होने लगा है। इसी आधार पर यह कहावत चरितार्थ हो गई है कि मानों एक स्त्री दो व्यवस्थाओं के बीच फँस गई हो, जिसके लिए दोनों में व्यवहारिक अंतर करना शेष नहीं रह गया है।

विशेष:

① हिंदू जाति के वर्णन के आधार पर नए मतों एवं नए धर्मों के प्रति नकारात्मक

Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टिकोण दिखाई देता है।

(ii) प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग है।

(iii) 'एक नारी जब दो से फँसी, जैसे सत्तर वैसे अस्सी' के माध्यम से लोकोक्ति का प्रयोग भी दिखाई देता है।

(iv) हिन्दू धर्म के विभाजन के कारण बौद्ध, जैन धर्मों का उदय हुआ, जिनमें आडंबरों पर चोट की गई।

(v) समस्त वैदिक संप्रदाय को हिंदू जाति से तुलना करने के कारण संकीर्ण नजरिया प्रतीत होता है।

(vi) वर्तमान समय में सर्वधर्म समभाव और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी अवधारणाओं को व्यवहारिक बनाने हेतु धार्मिक समन्वय आवश्यक है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मानं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश यशपाल द्वारा रचित ~~[illegible]~~ उपन्यास 'दिव्या' से लिया गया है। प्रस्तुत पंक्तियाँ महाश्रेष्ठी प्रेस्थ द्वारा पृथुसेन से कही गई हैं।

व्याख्या:

प्रेस्थ अपने पुत्र पृथुसेन को समझाते हुए कहता है कि एक युवती (देवसेना) के मोह में तुम मेरे द्वारा कमाए गए यश को नष्ट कर देना चाहते हो। स्त्री तो भोग्य की वस्तु है। अगर स्त्री के मोह में व्यक्ति की बुद्धि भ्रष्ट हो जाए, तो बलिदान/युद्ध हो जाते हैं। इसी कारण पुरुष को नारी केवल भोग्या समझनी चाहिए; क्योंकि वह पतन का द्वार प्रस्तुत करती है। महापंडित चाणक्य ने भी यही कहा है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

विशेष:

(i) संस्कृत-निष्ठ भाषा और सूत्र भाषा का प्रयोग किया गया है।

(ii) तत्समी भाषा की प्रधानता झलकती है।

(iii) स्त्री को भोग्या माना गया है, जो प्राचीन समय से लेकर वर्तमान तक प्रासंगिक बना हुआ है।

(iv) वस्तुत: प्राचीन समय में नारी को दण्ड का भागीदार माना जाता था और उसे पतन का मार्ग भी माना जाता था।

रामचरित मानस में तुलसी द्वारा कहा गया है:

"ढोल गँवार शूद्र पशु नारी,
सकल ताड़ना के अधिकारी।"

(v) नारी के वस्तुकरण की यही समस्या वर्तमान युग में भी बनी हुई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) मैं खुद अपने आगे खड़ा हूँ, मान्यताओं की सलीब पर टँगा हुआ, लहूलुहान!.... पत्थर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर है और लोग आँखें मूँदकर पत्थर मारते हैं.... लोग फूल चढ़ा रहे हैं मान्यताओं पर..... आदमी को बार-बार की नोची-छिछड़ी को दाँतों से नोंच-नोंचकर फेंक रहे हैं.... लोग नंगी औरत के कोमल शरीर को खुरदरे जूट के रस्सों से जकड़कर बाँध रहे हैं..... सिर्फ एक लाचारी का आरोप..... आदमी नहीं, टूटा हुआ, पुराना खण्डहर.... आखिर क्यों?

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सँदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश मार्कण्डेय कृत दूध और दवा (एक दुनिया समानांतर संपादक राजेंद्र यादव) से लिया गया है। वस्तुत: 'मैं' एक महान लेखक बनना चाहता है ; परंतु उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। ये पंक्तियाँ उसके अंतर्मन के द्वन्द्व को दर्शाती हैं।

व्याख्या : मान्यताओं पर आँख मूँदकर भरोसा करने वाले लोग उन मान्यताओं पर फूल चढ़ा रहे हैं। वे व्यक्ति को आगे नहीं बढ़ने देना चाहते। वस्तुत: वह एक महान लेखक बनना चाहता है; परंतु मान्यताओं के कारण और आत्मद्वन्द्व के कारण वह अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता और स्वयं को लाचार और बेबस पाता है, एक टूटे हुए मन के साथ।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :

(i) चेतना प्रवाह शैली का प्रयोग ; प्रेमचंद की कहानियों (जैसे: गुल्ली-डंडा) में भी यह दिखाई देती है।

(ii) पूर्णत: प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग। वस्तुत: 'मैं' के अंतर्मन के द्वन्द्वों की अभिव्यक्ति हुई है।

(iii) आत्मचेतस् और विश्वचेतस् का द्वन्द्व प्रतीत होता है, जो ब्रह्मराक्षस की भी मूल समस्या है।

(iv) बिंबात्मक भाषा (खुरदरे जूट के रस्सों) का प्रयोग प्रतीत होता है।

(v) इसी द्वन्द्व के कारण वह ('मैं') महान लेखन करने में सफल नहीं होता, जो मध्यवर्ग की आम समस्या को प्रदर्शित करता है, वर्तमान समय में यह व्यवहारिक प्रतीत होता है।

G/A 6/10

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) प्रत्येक परमाणु के मिलने में एक राग है, प्रत्येक हरी पत्ती के हिलने में एक लय है। मनुष्य ने अपना स्वर विकृत कर रखा है। इसी से तो उसका स्वर विश्व-वीणा में शीघ्र नहीं मिलता। पाण्डित्य के मारे जब देखो, जहाँ देखो बेताल-बेसुरा बोलेगा। पक्षियों को देखो, उनकी 'चहचह', 'कल-कल', 'छलछल' में, काकली में, रागिनी है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश महान उपन्यासकार जयशंकर प्रसाद के उपन्यास स्कंदगुप्त से लिया गया है। इसमें श्रेष्ठी कन्या विजया और बंधुवर्मा की बहन देवसेना के मध्य हो रहे वार्तालाप को बताया गया है।

व्याख्या : देवसेना विजया से कहती है कि प्रकृति के ~~सत्क~~ प्रत्येक कण में कुछ न कुछ संदेश है, प्रत्येक पत्ते के ~~ह~~ हिलने से प्रकृति का स्वर उत्पन्न होता है। मनुष्य ही एक प्राणी है, जिसके कारण संपूर्ण समस्या पैदा होती है। अपने घमंड के कारण मनुष्य किसी को अपने समकक्ष नहीं समझता। पक्षियों को देखकर उसे सीखना चाहिए, जो निस्वार्थ भाव से चहचहाते रहते हैं, अपनी मस्ती में मस्त रहते हैं और द्वेष या ईर्ष्या जैसे कोई विचार या मनोभावों से परे होते हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष :

(i) जयशंकर प्रसाद मूलतः छायावादी कवि हैं; अतः भाषा में लयात्मकता झलक रही है।

(ii) नव्य वेदांत दर्शन या आनंदवाद की स्पष्ट अनुभूति इन पंक्तियों में देखी जा सकती है।

(iii) ऐसा ही प्रकृति चित्रण दिव्या में भी देखने को मिलता है।

(iv) भाषा प्रतीकात्मकता लिए हुए है।

(v) तत्समी भाषा शैली का प्रयोग दिखाई देता है। जैसे : पांडित्य

(vi) बिंबात्मकता एवं ध्वन्यात्मकता स्पष्टतः दिखाई पड़ती है। जैसे : चहचह, कल-कल

(vii) वर्तमान समय में रूसो के चिंतन प्रकृति की ओर लौटो अत्यंत प्रासंगित प्रतीत होता है, जो द्वेष की समाप्ति हेतु आवश्यक है। गद्यांश में इसी ~~6~~ प्रकृति के तत्वों की अनुभूति को दर्शाया गया है।

Good A
6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

4. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

नई कहानी आंदोलन के प्रमुख रचनाकार अमरकांत की कहानी जिंदगी और जोंक के माध्यम से वर्तमान समाज की यथार्थ तस्वीर व्यक्त हुई है। वस्तुत: कहानी का पात्र 'रजुआ' उस वर्ग की ओर इशारा कर रहा है, जो जिन्दगी जीने के लिए संघर्षरत है, चाहे फिर उसके समक्ष संसाधनों का अभाव ही क्यों न हो।

- जिंदगी और जोंक के माध्यम से अमरकांत का वैशिष्ट्य झलका है:
- अमरकान्त ने चेतना प्रवाह शैली में यह कहानी लिखी है, जो कथानक को बाँधे हुए प्रतीत होती है। वस्तुत: कहानी का कथानक शुरू से अंत तक बँधा हुआ प्रतीत होता है।
- रजुआ के माध्यम से वर्तमान समय के मजदूर, गरीब वर्ग को साक्षात यथार्थत: प्रस्तुत कर देना अमरकांत

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

का विशिष्ट गुण है।

- कुछ-कुछ प्रसंगों में अंतर्मन में उत्पन्न होने वाले ~~द्व~~ द्वन्द्वों को स्पष्ट तौर पर कहानी में प्रस्तुत किया गया है और व्यवहारिक चरित्रों को गढ़ा गया है। कहानी में प्रतीत होता है कि सभी चरित्र स्वतंत्र हैं और वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के कारण बेवश हैं।
- कुछ प्रसंग धनी वर्गों के वर्चस्व पर व्यंग्य भी करते हैं, तो साथ ही कुछ प्रसंग (जैसे-पगली) समाज के अमानवीय रूप को भी प्रस्तुत करते हैं।
- कई जगह अमरकांत ने आत्म विश्लेषण को उभारा है और यह पाया है कि व्यक्ति जिंदगी से जौंक की तरह चिपक सकता है या फिर ~~प्रय~~ प्रयत्न करे, तो जिन्दगी उससे जौंक की तरह चिपक जाती है।
- कुछ मुहावरों का प्रयोग भाषा के प्रभाव को और निखार के साथ प्रस्तुत करता है। जैसे: "~~श्री~~ मुफ्त का नौकर किसे प्यारा नहीं है।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

- जिन्दगी और जोंक में दृश्यात्मक अथवा बिम्बात्मक भाषा का प्रयोग अपने आप में सराहनीय है, जिसने रजुआ, पगली को दृश्यमान रूप में अपनी कहानी में प्रस्तुत किया है।

- देशज़ भाषा शैली के साथ-साथ गालियों का प्रयोग भी अमरकान्त ने रचना में किया है (जैसे : रजुआ साला) और सामाजिक यथार्थ को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करने का एक बेहतर प्रयास किया है।

- आज के मध्यवर्ग की समस्या आर्थिक अस्थायित्व के साथ-साथ सामाजिक संवेदनहीनता है और साथ ही प्रशासन द्वारा निष्क्रियता प्रदर्शित करना भी इसका एक पहलू है। इस समस्या को जीवंतत: एवं मार्मिक रूप में अमरकांत ने कहानी में प्रस्तुत किया है।

- नयी कहानी आंदोलन का मूल प्रतिपाद्य मध्यवर्गीय समस्याओं को उठाना है, जिसमें गरीब वर्ग के साथ-साथ इन समस्याओं को जोड़कर ~~समाज~~ पाठक के समक्ष प्रस्तुत

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

करने का बेहतर कार्य अमरकान्त ने किया है।

- अमरकान्त की भाषा शैली और विषय समन्वय की समुचित एवं स्पष्ट प्रकटीकरण जिंदगी और जोंक के माध्यम से स्पष्ट हुआ है।

इसी कारण अमरकान्त की चेतना प्रवाह एवं द्वन्द्वात्मक शैली के साथ कथानक का बिना बिखराव का होना अपने आप में अद्वितीय प्रयास है, जो सामाजिक यथार्थ का स्पष्ट प्रकटीकरण प्रस्तुत करता है।

Gr.A 1½

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

स्कंदगुप्त नाटक जयशंकर प्रसाद द्वारा ~~रच~~ रचित एक चरित्र प्रधान नाटक है। वस्तुत: जयशंकर प्रसाद ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित नाट्य लेखन को अधिक महत्व देते हैं (जैसे – चंद्रगुप्त, ध्रुवस्वामिनी)।

- स्कंदगुप्त नाटक मूलत: केंद्रीय चरित्र स्कंदगुप्त पर रचित है, इसी के आधार पर इसका नामकरण किया गया है।

- किसी भी कृति का नामकरण 2-3 आधारों पर किया जा सकता है। यथा:
  (i) चरित्रों के आधार पर
  (ii) घटनाओं के आधार पर
  (iii) भावों के आधार पर
  ~~(iv) ...~~

वस्तुत: स्कन्दगुप्त के नामकरण की चर्चा अगर अन्य आधारों पर करें तो हम पाते हैं कि नाटक का नामकरण अन्य चरित्रों (जैसे: देवसेना, मातृगुप्त, पर्णदत्त) के माध्यम से इतना प्रभाव

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

उत्पन्न नहीं कर पाता, जितना स्कन्दगुप्त चरित्र से उत्पन्न होता है। वस्तुत: यह नामकरण सारगर्भित और समग्रता लिए हुए प्रतीत होता है।

घटनाओं के आधार पर अगर नामकरण किया जाता तो इस कृति का नाम <u>गुप्त साम्राज्य का संकट</u>, <u>देवसेना की व्यथा</u> आदि नाम उपयुक्त हो पाते; परंतु इन नामों में संपूर्ण नाटक समग्र रूप से समाहित न होकर एक घटना विशेष पर आधारित हो जाता साथ ही यह पाठक के मन में प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाता।

अन्य आधार उत्पन्न होने वाले भावों पर निर्भर है, जो '<u>क्रांति चेतना</u>', '<u>संघर्ष</u>' जैसे नामों के रूप में प्रयुक्त हो पाता; परंतु इनमें पाठक को संपूर्ण कथा का अनुभव नहीं हो पाता, जिसके आधार पर नाटक की विषयवस्तु केवल क्रांति पर केंद्रित हो जाती। वस्तुत: नाटक का कथानक थोपा हुआ अधिक प्रतीत होता, जो मूलत:

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

समाज की क्रांति चेतना पर आधारित होता।

अंततः स्कन्दगुप्त नाम ही कथानक एवं पृष्ठभूमि के सापेक्ष स्पष्ट बैठता है, जिसमें संपूर्ण कथानक का जुड़ाव और जन सामान्य में संघर्ष के प्रति चेतना का भाव पैदा हो सकता है और साथ ही सांस्कृतिक-चेतना जगाने के लिए यह नाम उपयुक्त प्रतीत होता है।

15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

(ग) 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की वर्तमान उपादेयता पर विचार कीजिये। 15

आषाढ़ का एक दिन मोहन राकेश द्वारा रचित नाटक है, जिसमें कालिदास की लोक जीवन में प्रचलित कथा को कथानक के रूप में प्रयोग में लाया गया है। यह कथानक वर्तमान परिदृश्य में अत्यंत व्यवहारिक ठहरता है, जिसके कारण निम्नलिखित हैं:

(i) आषाढ़ का एक दिन में कालिदास के माध्यम से वर्तमान समय में मौजूद रचनाकारों पर व्यंग्य किया गया है, जो अपनी मूल रचनाशीलता छोड़कर राजनीति में उलझ गए हैं। रचनाकारों का मूल कार्य जन सामान्य को प्रेरित करना होता है; परंतु अपने भोग-विलास की प्राप्ति हेतु वे अपने कर्तव्य से भटक चुके हैं।

(ii) प्रियंगुमंजरी जब मल्लिका को कालिदास की राजनीतिक निष्क्रियता के बारे में एवं उदासीनता के बारे में बताती है, तो वह परिदृश्य वर्तमान समय की राजनीति से संगतता प्रकट करता है। वस्तुतः वर्तमान राजनीतिक व्यक्तित्व भी राजनीतिक सक्रियता के स्थान पर केवल भोग-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विलास में लिप्त हैं, जिससे जनसामान्य के प्रति उनके दायित्व फीके पड़ चुके हैं।

(iii) कालिदास द्वारा राजनीति ग्रहण करने के पश्चात अपने मूल को भूल जाना; वर्तमान समय के सापेक्ष एक बेहतर उदाहरण प्रस्तुत करता है। वस्तुत: वर्तमान समय में जननेता अपनी प्रतिबद्धताओं को भूल चुके हैं, जिसके कारण समाज उनसे कट चुका है।

(iv) कालिदास अपने राज्य को छोड़कर पुन: मल्लिका के पास जाता है, जहाँ मल्लिका एक वेश्या बन चुकी है। वर्तमान समय में भी नारी की स्थिति समाज में इसी स्तर पर है। देश तरक्की भले ही कर रहा है; परंतु स्त्री का स्वरूप समाज में अभी भी भोग्या सदृश बना हुआ है। प्रमुखत: समाज में आज भी नारी के वस्तुकरण की प्रवृत्ति विद्यमान है, राजनीति निष्क्रिय और रचनाकार अपने उद्देश्य से विमुख हो चुके हैं।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

उपर्युक्त परिस्थितियाँ आषाढ़ का एक दिन को वर्तमान परिस्थितियों के सापेक्ष व्यवहारिक नाटक बनाती है, जो आज तक जीवंतता लिए हुए है।

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में संदर्भ-प्रसंग सहित व्याख्या लिखियेः 10 × 5 = 50

(क) सचमुच कुछ प्रश्नों की सफलता इसी बात में होती है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच गये हैं। उस प्रश्न का उत्तर भी हो, इसकी अपेक्षा वहाँ नहीं रहती। दूसरे शब्दों में, ऐसे प्रश्न का सही उत्तर यही होता है कि यह जिज्ञासु भाव लेकर हम जीवन की ओर लौट आयें और उसे जिज्ञासुवत् हो जियें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग: उपर्युक्त गद्यांश अज्ञेयकृत निबंध संवत्सर से लिया गया है, जिसमें जिज्ञासा भाव से जीवन व्यतीत करने के संदर्भ में बताया गया है।

व्याख्या: अज्ञेय के अनुसार सभी प्रश्नों का उत्तर मिलना अनिवार्य नहीं है। कुछ प्रश्नों में केवल यह अनिवार्य होता है कि हम उस प्रश्न तक पहुँच चुके हैं अर्थात उस प्रश्न को समझ चुके हैं। ऐसे प्रश्नों का सही उत्तर जिज्ञासा भावना को बनाए रखना है और जीवन में जिज्ञासा का समावेशन कर पाएँ और बेहतर तरीके से जीवन व्यतीत कर पाएँ; क्योंकि सभी प्रश्नों का उत्तर मिल पाना संभव नहीं है।

विशेष:

(I) बेहद प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

(II) उक्त निबंध गहरे आत्मचिंतन की अभिव्यक्ति है, जो जिज्ञासा / जिज्ञासु प्रवृत्ति को बढ़ावा दे रहा है।

(III) अज्ञेय मुख्यतः मनोवैज्ञानिक लेखन करते हैं। इसी आधार पर उन्होंने कई कहानियों, कविताओं (यथाः असाध्यवीणा) की रचना की है।

(IV) पंक्तियों में पूर्णता को असहज एवं अकल्पनीय मानकर कल्पना और जिज्ञासा को विकसित करने पर बल दिया है।

(V) इसी प्रकार जिज्ञासा में वृद्धि कर हम वर्तमान में कई अनजाने प्रश्नों को समझ पाएँगे तथा उन पर विचार कर पाएँगे।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) एक चीज थी जिसे तुम नष्ट कर देना चाहते थे और वह नष्ट हुई, यह प्रमाणित करते हुए कि वह है। मैं जानती हूँ, कि वह है और दो बार तुम उस पर आक्रमण कर चुके हो और वह उन्हें बचा गया है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग: उपर्युक्त पंक्तियाँ रघुवीर सहाय कृत विजेता कहानी से ली गई हैं। ये दो बार गर्भपात का प्रयास करने पर भी बच्चा स्वस्थ रूप में अपनी उपस्थिति का एहसास कराता है।

व्याख्या: अशोक द्वारा किए गए गर्भपात के प्रयासों के विफल हो जाने पर उसकी पत्नी कामिनी ~~कहती~~ कहती है कि तुम्हारे द्वारा किए गए प्रयासों से भी बच निकली। इसका मतलब उसका अस्तित्व है और यह बात प्रमाणित हो चुकी है। वस्तुत: अशोक द्वारा दो बार गर्भपात के प्रयास किए जा चुके हैं; परंतु इससे भ्रूण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

विशेष:

(i) मध्ययुगीन उलझनों का वर्णन हुआ है। वस्तुत: अशोक बच्चा नहीं चाहता; परंतु गर्भपात के प्रयासों के बाद भी भ्रूण स्वस्थ है।

(ii) अंतर्मन में द्वन्द्व की उपस्थिति का मार्मिक वर्णन इस कहानी में हुआ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iii) प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

(iv) आधुनिकता में वृद्धि का स्पष्ट प्रमाण इन पंक्तियों के माध्यम से झलकता है।

(v) संवादात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

G.A - 6/10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

(ग) कोई पीछे नहीं है, यह बात मुझमें एक अजीब किस्म की बेफिक्री पैदा कर देती है। लेकिन कुछ लोगों की मौत अन्त तक पहेली बनी रही है; शायद वे जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाते थे। उसे ट्रैजिक भी नहीं कहा जा सकता, क्योंकि आखिरी दम तक उन्हें मरने का अहसास नहीं होता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग : उपर्युक्त पंक्तियाँ निर्मल वर्मा की कहानी परिन्दे से ली गई हैं। वस्तुतः डॉ॰ मुकर्जी अपने देश वर्मा से दूर रहते हुए अपनी वेदना को व्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या: डॉ॰ मुकर्जी कहते हैं कि उनके पीछे उनके परिवार में कोई नहीं है, यह बात उनके मन में बेफिक्री पैदा करती है। उनके अनुसार बहुत लोगों की जिंदगी एक पहेली जैसी बन जाती है, जो इससे बहुत उम्मीद लगाते हैं और उन्हें अपने मरने का एहसास भी नहीं होता कि उनकी उम्मीदें टूट चुकी हैं। इस कारण उनकी मौत को एक ट्रेजिडी के रूप में भी नहीं देखा जाता।

विशेष:

(i) चिंतनात्मक एवं प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग, जो नयी कहानी का प्रमुख लक्षण है।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) बेचैनी और अजनबीपन का पुट झलकता प्रतीत हो रहा है। कुछ अन्य कहानियों में भी यह झलकता है।
जैसे : खोई हुई दिशाएँ, बदबू

(iii) जिन्दगी से बहुत उम्मीद लगाने वालों के प्रति व्यंग्यात्मक तलखियों का प्रयोग किया गया है।

(iv) जिन्दगी के प्रति नरपन का अभाव अन्त पंक्तियों में दिखाई पड़ रहा है।

(v) ट्रेजिक जैसे अंग्रेजी और बेफिक्री जैसे उर्दू शब्दों का प्रयोग

(vi) वर्तमान समय में भी ये पंक्तियाँ व्यवहारिक। वस्तुतः उम्मीद के ज्यादा होने से अंततः निराशा ही हाथ लगती है।

G/A 6/10

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग: उपर्युक्त पद्यांश जयशंकर प्रसाद कृत स्कंदगुप्त नाटक से लिया गया है। जहाँ आखिरी भाग में (नाटक के) देवसेना स्कंदगुप्त से कह रही है।

व्याख्या: देवसेना कहती है कि अगर आप क्षणिक सुखों की प्राप्ति हेतु मुझसे विवाह करना चाहते हैं, तो मुझे क्षमा करें। आपका दायित्व इन क्षणिक सुखों से कहीं बढ़कर है। अत: मैं आपसे प्रेम तो करती हूँ; परंतु आप के इन कार्यों में मैं बाधक नहीं बनना चाहूँगी। इसीलिए कष्ट ही ~~[illegible]~~ तपस्या का प्रखर रूप है और सुख की प्राप्ति नहीं करके अपने दायित्वों का निर्वहन करना ही व्यक्ति का लक्ष्य होना चाहिए। इसी कारण मेरे स्वामी मुझे ~~इ~~ क्षमा करें।

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष:

(i) प्लेटोनिक प्रेम की उपस्थिति दिखती है। यही प्रेम गोदान की मिस मालती में भी झलकता है।

(ii) लयात्मकता गद्यांश में उपस्थित है। वस्तुत: प्रसाद छायावादी कवि हैं।

(iii) तत्सम प्रधान भाषा शैली का प्रयोग किया गया है।

(iv) प्रतीकात्मक और सूत्रभाषा का प्रयोग किया गया है। जैसे: कष्ट हृदय की कसौटी है।

(v) प्रस्तुत नाटक में नव्य वेदांत दर्शन या आनंदवाद स्पष्टत: झलकता है।

(vi) वर्तमान समय में आध्यात्मिक प्रेम की आवश्यकता प्रासंगिक हो चुकी है; क्योंकि वर्तमान समय में प्रेम केवल देहमूलक हो चुका है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

(ङ) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

संदर्भ एवं प्रसंग: उपर्युक्त गद्यांश ~~सम्भवतः~~ मोहन राकेश कृत आषाढ़ का एक दिन से लिया गया है। तृतीय अंक में कालीदास का एकालाप मल्लिका के समक्ष कहा गया है।

व्याख्या: कालिदास मल्लिका से कहता है कि क्या तुम मुझे पहचानती हो? शायद नहीं पहचानती क्योंकि अब मैं वह व्यक्ति नहीं रह गया, जिसे तुम पहले जानती थी। अर्थात कालिदास अब एक सम्राट के रूप में था, जो अपने मूल स्वरूप (लेखक / कवि) को छोड़कर राजनीतिक विलासिता में लीन हो गया था और इसी आधार पर वह अपने दायित्वों को भूल चुका है। इसी कारण अब वह कोई अन्य व्यक्ति है और उसे स्वयं को पहचानने में लज्जा आ रही है; क्योंकि वह अपने राजनीतिक दायित्वों को भी छोड़कर भाग चुका है।

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

विशेष:

(i) एकालाप का मूर्त रूप उपस्थित है।

(ii) आंतरिक द्वन्द्व का स्वरूप गद्यांश से झलकता है।

(iii) प्रतीकात्मक भाषा शैली का प्रयोग किया गया है।

(iv) स्पष्ट और ~~सर~~ सहज लोककथा: कालीदास की कथा को कथानक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। प्रसाद ने भी ऐतिहासिक आवरणों का रचनाओं में प्रयोग किया है। यथा: स्कन्दगुप्त, चंद्रगुप्त

(v) वर्तमान समय में भी सत्ता और रचनाशीलता के प्रति निष्क्रियता और जनसामान्य के प्रति दायित्वों को निभाने में एक व्यवधान के रूप में कार्य करते हैं, जो आषाढ़ का एक दिन की प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) आंचलिक होते हुए भी मैला आँचल अपनी आंचलिकता का अतिक्रमण करता है और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य का साक्षात्कार करता है। आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फणीश्वरनाथ रेणु कृत मैला आँचल आंचलिक उपन्यासधारा का एक महत्वपूर्ण एवं शीर्ष उपन्यास है। जिसमें समस्त अंचल को ही नायक का दर्जा दिया गया है। वस्तुतः मैला आँचल की प्रस्तावना में रेणु ने लिखा है कि "इसमें फूल भी हैं और शूल भी।"

मैला आँचल संपूर्ण अंचल को समाहित करके लिखा गया एक उपन्यास है। वस्तुतः मैला आँचल में ग्रामीण परिवेश का वर्णन मिलता है। अनेक प्रथाओं, रीति-रिवाज, लोक नृत्य (बिदापत नृत्य), लोक गीत आदि को वर्णित किया गया है। साथ ही ग्रामीण परिदृश्य में धनी वर्ग और गरीब वर्गों को भी यथार्थरूप में प्रस्तुत कर दिया गया है। ग्रामीण जन समुदाय, आदिवासी आदि को भी कथानक में हिस्सा बनाया गया है। वस्तुतः गाँव में व्याप्त ~~बेरोजगारी~~ गरीबी और अंधविश्वास को भी ~~मैला~~

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचल में शामिल किया गया है। वस्तुतः समग्र रूप से ग्रामीण परिवेश की सुंदरता एवं कुरूपता का अंकन इस उपन्यास में समाहित हुआ है।

वस्तुतः मैला आँचल में भौगोलिक परिदृश्य की तथ्यात्मक जानकारी न के बराबर दी गई है, जिससे यह उपन्यास संपूर्ण आंचलिकता के साथ एक राष्ट्रीय रूप ग्रहण करता हुआ प्रतीत होता है।

वस्तुतः यह गाँव भारत के किसी भी अन्य पिछड़े गाँव को प्रस्तुत करता है, जो भौगोलिक सीमाओं से व्यापक है। वस्तुतः प्रत्येक गाँव में कुरूपता (यथा: कुरीतियाँ, बीमारी, अंधविश्वास आदि) हैं, तो साथ ही सुंदरता (प्राकृतिक सुंदरता, सहचर्य, लोक गीत, लोक नृत्य आदि) भी है। इसी आधार पर यह प्रत्येक भारतीय गाँव के परिदृश्य से मेल खाता हुआ प्रतीत होता है।

एक अन्य विशेषता मैला आँचल की ये है कि यह परिदृश्य राजनीतिक पहलुओं को भी समेटता है। वस्तुतः गाँव में अनेक

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दलों (यथा: कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टी) का प्रभाव एवं विस्तार हो रहा है, जो तत्कालीन भारतीय समाज में उभरती राजनीतिक चेतना को प्रसार देने में महत्वपूर्ण है। इस स्तर पर भी यह उपन्यास राष्ट्रीय स्वरूप लिए हुए प्रतीत होता है।

वंचित वर्गों द्वारा उत्पन्न होने वाला संघर्ष (यथा: संथालों द्वारा क्रांति) को भी इस उपन्यास ने समेटा है, जिसके कारण भारतीय समाज में उदय होती वर्ग चेतना का भी पुट दिखाई पड़ता है, जो अपने अधिकारों के प्रति सजग हैं और मुखरता से उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयासरत हैं।

एक अन्य पहलू राष्ट्रीयता को समाहित करने का यह है कि बावनदास की दुलारचन्द कापरा (एक कांग्रेस कार्यकर्ता) द्वारा किया जाना हत्या गाँधीवादी मूल्यों की हत्या को प्रदर्शित करता है। वस्तुत: अभी स्वतंत्रता मिली ही थी कि राजनीतिक दल अपनी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

प्रतिबद्धताओं को भूल चुके हैं और वे स्वार्थसिद्धी पर बल दे रहे हैं, जो राष्ट्रीय स्तर पर गंभीर चिंता का विषय है।

समग्र रूप से मैला आँचल एक प्रमुख आंचलिक उपन्यास होने के साथ-साथ राष्ट्रीय परिपेक्ष्य को भी समाहित करता है, जो कि इसकी प्रासंगिकता का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

12/20

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'अलग्योझा' कहानी के कथ्य का विश्लेषण कीजिये। 15

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में गरीब वर्गों एवं किसान वर्गों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं को उभारा है। अलग्योझा में भी परिवार के टूटने की समस्या को प्रस्तुत किया है।

कहानी में रग्गू के पिता द्वारा पत्नी की मृत्यु के बाद दूसरी शादी की जाती है, जो रग्गू के लिए अत्यंत कष्टदायी परिस्थितियाँ उत्पन्न कर देती है। वस्तुतः सौतेली माँ उसे भरपेट खाना नहीं देती थी और यातनाएँ देती थी। पिता की मृत्यु के पश्चात् रग्गू ने ही घर संभाला और अपने सौतेले भाई-बहनों को पाला, जिससे उसकी सौतेली माँ का हृदय परिवर्तन हो गया।

सौतेली माँ के कहने पर जब वह ~~दूसरी~~ शादी करता है, तो पारिवारिक कलह के कारण परिवार टूट जाता है। चिंता के कारण रग्गू

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की मृत्यु हो जाती है। मृत्यु के पश्चात् रग्गू का सौतेला भाई ~~[illegible]~~ रग्गू की पत्नी से शादी कर लेता है और पुनः परिवार जुड़ जाता है।

वस्तुतः यह कहानी व्यवहारिक स्तर पर आदर्शोन्मुखी यथार्थवाद से प्रेरित है और इसी आधार पर अंत दुःखद न होकर सुःखद बताया गया है। यह कहानी प्रेमचंद द्वारा गाँधीवादी सिद्धांत का अनुसरण हृदय परिवर्तन के सिद्धांतानुसार करती है। वस्तुतः यह भी यथार्थवाद के चरम रूप को व्यक्त नहीं होने देता।

प्रेमचंद के अनुसार ~~सौतेली माँ के~~ घर के टूटने या परिवार के टूटने की समस्या गरीब एवं निम्न मध्यवर्ग की एक व्यवहारिक समस्या है, जिसके आधार पर किसी परिवार का संपूर्ण परिदृश्य परिवर्तित हो जाता है। अतः अंत में वे परिवार को पुनः जुड़ा हुआ व्यक्त करते हैं, जिससे

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

जन सामान्य को समन्वयपूर्वक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा मिले। प्रेमचंद की कहानियों में गरीब किसान वर्ग की समस्याओं का समाधान अंतिम रूप से हृदय परिवर्तन द्वारा ही होता है (यथा: बड़े घर की बेटी), जो कि इस कहानी का मूल प्रतिपाद्य है, जिससे संयुक्त परिवार की संरचना बनी रहे और परिवार में टूटन न आए।

प्रेमचंद की स्त्री मनोविज्ञान भी हालाँकि इसमें उभर कर व्यक्त हुआ है।

जैसे: "पन्ना एक रूपवती स्त्री थी। रूप और गर्व में चोली-दामन का नाता है।"

9/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास में निहित नाटकीयता के उन बिंदुओं को रेखांकित कीजिये जिनके कारण उसका नाट्य-रूपातरण रंगमंच पर सफल सिद्ध हुआ है। 15

महादेवी वर्मा द्वारा रचित उपन्यास महाभोज एक वर्तमान परिदृश्य सापेक्ष बेहतर रचना है। वस्तुत: महाभोज को रंगमंच पर सफलतापूर्वक मंचित किया जा चुका है, जिसके मुख्य निम्न आधार रहे हैं:

(i) चरित्रों का व्यापक एवं विस्तारपूर्वक वर्णन (जैसे: दा साहब, सुकुल बाबू) जिसके कारण चरित्र दृश्यवत् प्रतीत होते हैं।

(ii) रंग संकेत एवं नादात्मकता के भी उपन्यास में पर्याप्त उदाहरण मिले हैं। वस्तुत: भाषणों का गाँव में ऐलान इसका प्रमुख उदाहरण है।

(iii) चरित्रों की भाव-भंगिमा का वर्णन मन्नू भंडारी महादेवी वर्मा ने स्पष्ट रूप से किया है। जैसे: "दा साहब गुस्सा नहीं करते, केवल बात को बीच से ही काट देते हैं।"

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) कथानक भी पूर्णतः सधा हुआ है, जिससे संबंध निर्वाह भी प्रवाहशीलता लिए हुए है। भाषणों एवं सभाओं के दृश्य भी मुखर तौर पर नाटक के मंचन में तीव्रता उत्पन्न करते हैं।

(v) ~~बिस~~ बिसू की मौत को राजनीति के लिए अवसरवादिता के रूप में व्यक्त करना भी राजनीति के कई आयामों को प्रदर्शित करता है और इसी के आधार पर उपन्यास का नाम महाभोज अपने आप में ऐसे अवसरवादी परिदृश्य को बिंबात्मक रूप में प्रदर्शित करता है।

(vi) गवाहों के बयान संवादात्मक शैली की विशेषता लिए हुए हैं, तो छोटे-छोटे चुस्त संवाद तीव्रता में वृद्धि करते हैं।

(vii) मि० सक्सेना द्वारा दिनेश को याद करना पूर्वदीप्ति शैली का स्पष्ट उदाहरण है। जिससे मंचन में

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

मदद मिलती है।

(viii) पार्टी ऑफिस की एक-एक वस्तु, प्रकाश योजना का वर्णन और DIG के घर पार्टी का दृश्य भी प्रकाश योजना को साधृश्य प्रस्तुत करदेता है।

(ix) मि० सक्सेना के मन के अंतर्द्वन्द्वों का भी बारीकी से वर्णन उपन्यास को नाटकीय रूप देता है।

वस्तुतः संवाद योजना, प्रकाश योजना, दृश्य विधान और कथानक की निरंतरता के कारण यह उपन्यास आज तक प्रासंगिक बना हुआ है और मंचित होता आया है।

और है

9/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 87501875...

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि *The Vision*

8. (क) क्या 'भारत-दुर्दशा' को 'त्रासदी' माना जा सकता है? अपना मत प्रकट कीजिये। 20

त्रासदी यूनानी परंपरा का महत्वपूर्ण भाग है। जिसमें कथानक के अंत में दुःखद परिदृश्य झलकता है। पश्चिमी नाट्य परंपरा में त्रासदी के कुछ चरण बताए गए हैं:

(i) उत्थान
(ii) द्वन्द्व का विकास
(iii) चरम बिंदु
(iv) निगति
(v) पतन

उपर्युक्त चरणों से भारत-दुर्दशा की चर्चा करने पर निर्धारित किया जा सकता है, कि यह त्रासदी है या नहीं?

→ भारत दुर्दशा में नायक अत्यंत दयनीय स्थिति में है। भारत की हालत ऐसी है कि वह शत्रु की ललकार मात्र से बेहोश हो जाता है।

→ भारत दुर्दशा का कथानक सरल रेखीय एवं स्पष्ट है। वस्तुतः मूल तौर पर इसमें द्वन्द्व की उपस्थिति नहीं प्रतीत होती है।

→ कथानक में नायक द्वारा कोई ऐसी नैतिक भूल परिलक्षित नहीं होती, जिसके आधार पर उसे त्रासदी की श्रेणी में रखा जा सके।

Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि *The Vision*

→ भारत-दुर्दशा में कथ्य अत्यंत स्पष्ट और सरल है, जहाँ कथानक शुरू से अंत तक भारत की दुर्दशा पर टिका हुआ है; हालांकि कुछ दृश्यों में अतीत के सुनहरे क्षणों को अभिलक्षित किया गया है। परंतु वर्तमान में भारत की स्थिति दयनीय है, जिसका मूल कारण नैतिक भूल न होकर, तार्किक विकास की कमी और स्वाधीनता के प्रति निष्क्रियता का भाव है।

→ अंतिम दृश्य में भारत का बेहोश हो जाना दर्शक के मन में विरेचन का भाव उत्पन्न न करके भारत के प्रति सहानुभूति का भाव प्रदर्शित करता है। यह त्रासदी के चरणों के संगत नहीं है।

साथ ही भारत-दुर्दशा का नायक फटे-पुराने चिथड़े लपेटे हुए शुरू से अंत तक दिखाई पड़ता है। वह किसी प्रकार के प्रयास हेतु तत्पर या सक्रिय रूप में नजर नहीं आता है। अपनी दयनीय स्थिति के प्रति उसमें कोई विद्रोही प्रक्रिया उत्पन्न नहीं होती है।

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भारत दुर्दशा का अंत एक आधार पर दुःखद माना जा सकता है। वस्तुतः त्रासदी का अंत भी दुःखद बिंदु पर समाप्त होता है; यथा: नायक की हार या मृत्यु, जिसका कारण नायक द्वारा की गई कोई नैतिक भूल होती है।

भारत-दुर्दशा में भारत का अंत में बेहोश हो जाना दुःखद तो अवश्य प्रतीत होता है; परंतु इसका कारण नैतिक भूल न होकर संघर्ष के प्रति उदासीनता एवं निष्क्रियता है।

संपूर्ण रूप से भारत-दुर्दशा का मूल प्रतिपाद्य भारत में निवास करने वाले व्यक्तियों के हृदय में भारत की स्वाधीनता हेतु चेतना जगाने से संबंधित है। भारतेंदु हरिश्चंद्र जन सामान्य को अतीत के गौरव से परिचय करवाकर वर्तमान स्थितियों से साक्षात्कार कराना चाहते थे।

इसी आधार पर लिखा गया यह नाटक ट्रैजिडी का स्वरूप ग्रहण नहीं करता; अपितु समग्र रूप से अपने मंचन को प्रभावी बनाते हुए

Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जन प्रेरणा का स्रोत बनने पर बल देता है। दूसरे देशों के माध्यम से तार्किकता और चेतना को विकसित करने पर बल दिया गया है।

अतः भारत-दुर्दशा त्रासदी का रूप ग्रहण नहीं करते हुए भी अपने प्रतिपाद्य को प्राप्त करने में सफल हुआ है।

12/20

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

(ख) 'रेणु का कथा शिल्प कहा आंचलिक जाता है जो एक माने मे ठीक है, पर उपन्यास की दृष्टि में सम्पूर्ण जातीय जीवन एक साथ समोया हुआ है।' यदि ऐसा है तो क्या हम मान सकते हैं कि 'गोदान' के बाद की कथा 'मैला आँचल' कहता है? 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रेणु आँचलिक उपन्यास लेखन में शीर्ष व्यक्तित्व रहे हैं। उन्होंने 'मैला आँचल' में संपूर्ण आंचलिकता को समेटा है। मैला आँचल, अंचल में व्याप्त अच्छाई और बुराई को समेटें हुए एक महत्वपूर्ण उपन्यास है।

गोदान के सापेक्ष मैला आँचल:

(i) गोदान मुख्यतः कृषक वर्ग एवं मजदूर वर्ग के साथ-साथ शहरी अमीर वर्ग को समेटे हुए है। मैला आँचल में इसका प्रसार दिखता है।

(ii) गोदान में विचारधाराओं का टकराव विद्यमान है। यथा: होरी मरजाद को मानता है; जबकि गोबर पैसे की ताकत को।

(iii) गोदान में दो-तीन कथाएँ समांतर चलती हुई प्रदर्शित हुई हैं।

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(iv) गोदान स्थान विशेष पर अधिक तथ्य प्रस्तुत करके एक साधारण किसान वर्ग पर आश्रित एक उपन्यास है।

(v) मैला आँचल में किसानों के साथ-साथ संपूर्ण गाँव का विस्तृत वर्णन हुआ है। मैला आँचल संपूर्ण अच्छाईयों एवं विद्रूपताओं को समेटे हुए है, जो गोदान से व्यापक प्रतीत होता है।

इसी संदर्भ में रेणु ने कहा है कि " इसमें फूल भी हैं और शूल भी।"

(vi) मैला आँचल में यथास्थिति दृश्यों का वर्णन कर दिया गया है, जिसमें अंचल में मौजूद प्रथाओं, रीति-रिवाज आदि को समेकित किया है, जो गोदान से व्यापकता लिए हुए हैं।

(vii) मैला आँचल ~~चरम~~ यथार्थवाद का स्पष्ट प्रकटीकरण है, चमत्कार या हृदय परिवर्तन जब ग्राम जीवन में

दृष्टि The Vision 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright - Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

नहीं होता है, तो इसमें भी नहीं है, जो गोदान में होने वाले हृदयपरिवर्तन (यथा: मातादीन) से ~~विस्तृत~~ ~~अगला~~ अगला चरण है।

(viii) हालाँकि गोदान में कुछ प्रसंगों में कथानक में बिखराव दिखाई देता है; परंतु मैला आंचल संपूर्ण कथानक को प्रभावी ढंग से समेट कर लिखा गया उपन्यास है।

शिल्प और कथानक की दृष्टि से गोदान का विस्तृत एवं व्यापक रूप मैला आंचल में प्रस्तुत होता है, जहाँ चरित्र नायक न होकर संपूर्ण अंचल ही नायक है।

G.A

11

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

(ग) 'कफ़न' की संवेदना पर विचार कीजिये। क्या यह कहानी दलित-विरोधी है? 15

'कफन' प्रेमचंद की एक महत्वपूर्ण कहानी है, जिसमें प्रेमचंद का चरम यथार्थवादी रूप स्पष्टत: झलकता है।

- वस्तुत: कफ़न माधव और घीसू पर केंद्रित एक कहानी है, जिसमें दिखाया गया है कि गरीबी के कारण वे दोनों कितने संवेदनहीन बन चुके हैं।
- वस्तुत: माधव और घीसू ~~बुधिया~~ बुधिया के मरने का इंतज़ार कर रहे हैं, उनके पास खाने के लिए पैसे नहीं हैं और पैसों के अभाव ने उन्हें संवेदनहीन बना दिया है।
- दोनों इस कारण बुधिया को देखने घर में अंदर नहीं जाते, क्योंकि अगर वो अंदर गए, तो एक के हिस्से के आलू दूसरा खा जाएगा।
- बुधिया के मरने के पश्चात् वे कफ़न हेतु पैसे माँगते हैं; परंतु भूख और

दृष्टि The Vision | 641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation
Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

गरीबी के कारण, वे कफ़न के पैसों से खाना खाते हैं और साथ ही समाज के अमीर वर्ग पर तंज कसते हैं।

घीसू कहता है," उसे स्वर्ग ~~कहीं~~ नहीं मिलेगा, तो क्या मोटे-मोटे साहूकारों को मिलेगा, जो दिन-भर लोगों का खून चूसते हैं।"

कफ़न क्या दलित विरोधी है?

वस्तुतः प्रेमचंद ने दोनों पात्रों को दलित वर्ग से माना है और उनकी असंवेदनशीलता के कारण कई आलोचक इसे दलित विरोधी रचना कहते हैं।

परंतु यह कहानी केवल गरीबी से उत्पन्न हुई असंवेदनशीलता को व्यक्त करती है। वस्तुतः गरीबी ग्रामीण क्षेत्र में मजदूर, किसान वर्गों में ज्यादा व्याप्त थी और उसका परम यथार्थवादी स्वरूप कफन में झलकता है।

यह कहानी घीसू और

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009 | 21, पूसा रोड, करोल बाग, नई दिल्ली | 13/15, ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज | प्लॉट नंबर-45 व 45-A हर्ष टावर-2, मेन टोंक रोड, वसुंधरा कॉलोनी, जयपुर
दूरभाष : 8448485518, 011-47532596, 8750187501 :: www.drishtiIAS.com
Copyright – Drishti The Vision Foundation

Scanned with OKEN Scanner

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

माधव की न होकर संपूर्ण गरीब वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है और साथ ही समाज की पूँजीवादी सोच पर भी कटाक्ष करती है। वस्तुतः समग्रता से ~~देखें~~ देखें तो यह कहानी पाठक को विचलित कर देने वाले यथार्थ को समेटे हुए है।

इस दृष्टिकोण से कफ़न दलित विरोधी न होकर निम्न एवं निर्धन वर्गों की दयनीय स्थिति को व्यक्त करती है, जिसका कारण शोषक (पूँजीपति) वर्ग है और मजदूर वर्ग की निष्क्रियता भी।

9/11

Scanned with OKEN Scanner